# MR. SAM PITRODA
# CHAIRMAN, NATIONAL KNOWLEDGE COMMISSION

**From:** Sam Pitroda <Sam@sampitroda.com>

**To:** "Sanjay Lambade" <sanjaylambade@rediffmail.com>

**Subject:** **Re: Compilation of work done under Knowledge Center Initiative**

**Date:** Mon, 07 Aug 2017 05:48:06 IST

Dear Sanjay,

Always good to hear from you. Thank you all the good work you do to promote Physics education and awareness in India. I may be interesting to get a few more friends and create a portal on Physics for India in all major Indian languages. Let us prepare a plan . I know with little support and your leadership we can do it. You are already doing a lot. The key is to do a good job of curation to expand the horizon and increase coverage and access.

Good Luck.

Sam Pitroda

**From:** Sam Pitroda <sam.pitroda@c-sam.com> | Add to Address Book | **This is spam**

**To:** '"Sanjay Lambade"' <sanjaylambade@rediffmail.com>

**Subject:** **RE: Vision for Knowledge Based India**

**Date:** Wed, 06 Dec 2006 04:40:32 IST

Note: To help protect your privacy, images from this message have been blocked. View images | What is this?

Dear Dr. Jain,
With great interest I finished reading your note. I have been now thinking about the list of things to do..
Would you help me please in identifying ten recommendations based on your note that will help India in Education and Science?
The recommendations have to be clear, crisp and executable with focus on specific, tangible, measurable benefits.
I would appreciate your help in this. There after we can discuss next steps.
Regards.
Sam Pitroda

**From:** Sam Pitroda <sam.pitroda@c-sam.com> | Add to Address Book | **This is spam**

**To:** '"Sanjay Lambade"' <sanjaylambade@rediffmail.com>

**Subject:** **RE: RE: ] Vision for Knowledge Based India**

**Date:** Fri, 19 Oct 2007 04:13:41 IST

Note: To help protect your privacy, images from this message have been blocked. View images | What is this?

Thanks. I hope you all had a good trip back home. Thanks for coming to Delhi. I enjoyed talking to you all and wish you all the luck.

Sam Pitroda

## DR. A. P. J. KALAM, FORMER PRESIDENT OF INDIA

| | |
|---|---|
| **From:** | presidentofindia@nic.in |
| **To:** | "Sanjay Lambade" <sanjaylambade@rediffmail.com> |
| **Subject:** | **Re: Physics Series** |
| **Date:** | Sun, 02 Apr 2006 15:02:08 IST |

Dear Shri Sanjay Lambade,

Thanks for your mail. Your idea of promoting physics learning through your physics series published in the local daily “Hitavada” will be really useful in igniting the young minds.

My best wishes to you.

Kalam

## MRS. PRATIBHA PATIL, FORMER PRESIDENT OF INDIA

| | |
|---|---|
| **From:** | Pratibha Devisingh Patil <presidentofindia@nic.in> \| Add to Address Book \| **This is spam** |
| **To:** | Sanjay Lambade <sanjaylambade@rediffmail.com> |
| **Subject:** | **Re: Fwd: Vision for Knowledge Based India** |
| **Date:** | Mon, 29 Sep 2008 11:04:52 IST |

Go to Attachment(s)

Note: To help protect your privacy, images from this message have been blocked. View images | What is this?

Dear Shri Sanjay,

Thank you for forwarding the paper prepared by Shri Girish Sahasrabudhe and you on ¡±Vision for Knowledge based Industry¡±. As it has been submitted to the National Knowledge Commission, they would definitely examine the ideas in the paper.

I am directed to thank you for the e-mail and to convey the best wishes of the Hon¡¯ble President of India.

With regards,

Yours sincerely,
[ B.C Mishra ]

**PROF CNR RAO, BHARAT RATNA**

सत्यमेव जयते

PROFESSOR C.N.R RAO
CHAIRMAN

GOVERNMENT OF INDIA
SCIENTIFIC ADVISORY COUNCIL
TO THE
PRIME MINISTER

SAC-PM/07/2010-621
October 22, 2010

Dr. Sanjay D Jain
Professor in Physics
G.H. Raisoni Institute of Engineering and
Technology for Women
B-37, Shradha Park
Hariganga, Hingna-Wadi Link Road
Nagpur 16

Dear Dr. Jain,

Thanks for your proposal which has many good points in it. I wish you luck with your noble endeavour. I suggest that you take up one or two important things that one can achieve and not fight at a broad front.

I enclose a vision document prepared by the Science Advisory Council to the Prime Minister for your use.

With best wishes,

Yours sincerely,

(C.N.R. RAO)
National Research Professor
&
Linus Pauling Research Professor

Encl: Vision document

Address for Correspondence: Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research, Jakkur P.O., Bangalore-560064. Indi
Tel.: 91-80-23653075, 22082761 Fax: 91-80-22082760 E-mail: cnrrao@jncasr.ac.in

## MR N RAGHURAMAN, RENOWNED COLUMNIST

**From:** RAGHURAMAN <raghu@bhaskarnet.com> | Add to Address book |**This is spam**

**To:** Sanjay Lambade <sanjaylambade@rediffmail.com>

**Subject:** **Re: Vision for Knowledge Based India**

**Date:** Tue, 21 Dec 2010 13:23:01 IST

Note: To help protect your privacy, images from this message have been blocked.View images | What is this?

Hi Mr Sanjay,
my one word for this proposal is : AMAZING.
Now I like to know what is the response to this from those who were the recipient of the same?
In fact this gives me to write a column on bringing Chinese cuisine concept in eduction rather than MacDonald. You will be reading this soon. thanks
cheers
raghuraman

र & ज्ञान नागपुर. शुक्रवार. 24 दिसंबर 2010 8

# शिक्षा में लाएं चायनीज रेस्त्रां का कांसेप्ट

एन रघुरामन

मैनेजमेंट फंडा

आखिर शिक्षा पूर्व-निर्धारित पैकेज में क्यों हो? यदि मैं 16 वर्ष की उम्र में साइंस की पढ़ाई नहीं कर सका, तो आज इसकी शिक्षा क्यों नहीं ले सकता?

इन दिनों भारत के ज्यादातर शहरों में आपको मैक्डोनल्ड्स दिख जाएगा, लेकिन इसके एक या दो से ज्यादा आउटलेट्स देखने को नहीं मिलेंगे। महानगरों में जरूर विशाल आबादी की जरूरतों के लिहाज से इनकी संख्या ज्यादा हो सकती है। लेकिन जिन शहरों में मैक्डोनल्ड्स का एक आउटलेट मिलता है, उसी शहर में आपको अनेक चायनीज ज्वाइंट्स मिल जाएंगे। मैक्डोनल्ड्स की तरह इन गैर-नियोजित चायनीज ज्वाइंट्स का भी अपना अलग ग्राहक वर्ग होता है, जो उन्हें संरक्षण देता है। ग्राहक आते हैं और सड़क किनारे स्थित कम दरों वाले रेस्त्रां के अलावा मेनलैंड चाइना (देश में चायनीज रेस्त्रां की एक प्रमुख शृंखला) जैसे फाइव-स्टार ज्वाइंट्स में चाइनीज व्यंजनों का लुत्फ उठाते हैं। यदि उन्हें यह पसंद आता है तो वे यहां आते रहते हैं और यदि पसंद नहीं आता तो वे किसी और ज्वाइंट पर जाकर उसके व्यंजनों का जायका लेते हैं। यही कारण है कि इस देश के हर गली-नुक्कड़ पर आपको चायनीज रेस्त्रां मिल सकते हैं। खुद को चायनीज व्यंजनों का विशेषज्ञ बताने वाले ज्यादातर लोग न तो इंडियन होटल मैनेजमेंट एजुकेशन के छात्र होते हैं न ही चीन से इस कला को सीखकर आते हैं। लेकिन ये लोग चायनीज व्यंजन खाने की चाह रखने वाले हजारों लोगों का पेट भरते हैं। मुझे नागपुर के रायसोनी ग्रुप में फिजिक्स के प्रोफेसर संजय लंबाडे द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग को लिखे गए एक पत्र को देखने का मौका मिला। उन्नीस पेज के इस पत्र के एक पैराग्राफ का मैं यहां उल्लेख कर रहा हूं, जो इस प्रकार है- 'आज की दुनिया में ज्ञान को ताकत माना जाता है। हालांकि हमारा शैक्षणिक ढांचा किसी व्यक्ति के विकास और उसके ज्ञान के बीच विश्वसनीय कड़ियां स्थापित नहीं कर पाया। धन की ताकत को देखते हुए हमने धन से जुड़े परिमाणन और मूल्यांकन के लिए कई सिस्टम तैयार कर दिए। मिसाल के तौर पर यदि कोई व्यक्ति अपने कर के बारे में जानना चाहता है तो उसके लिए आयकर की सुस्पष्ट गणना की व्यवस्था है। ज्ञान संबंधी सुधारों से भारतीय अर्थव्यवस्था की नींव में वेल्थ पावर से माइंड पावर का सहज बदलाव सुनिश्चित होना चाहिए। धन के महत्व को रेखांकित करने वाली धारणाओं व पद्धतियों को जहां तक संभव हो, नॉलेज में भी लागू किया जाए। मिसाल के तौर पर एक कहावत है कि या तो आप पैसे का इस्तेमाल करते हैं या इसे खो देते हैं। नॉलेज सोसायटी के संदर्भ में भी यही बात सत्य हो सकती है कि या तो आप ज्ञान का इस्तेमाल करते हैं या इसे खो देते हैं। ज्ञान आधारित गतिविधियों में समाज की दिलचस्पी निर्मित करने व बढ़ाने तथा तमाम वर्गों में मौजूद ज्ञान से जुड़ी प्रतिभाओं की पहचान व सम्मान के लिए नॉलेज के निर्धारण और मूल्यांकन के सुस्पष्ट मानक निर्मित करने होंगे। नॉलेज क्रांति में समृद्ध होते निजी शैक्षणिक ढांचे को सम्मिलित करने के लिए समुचित कदम उठाने होंगे।' अब सवाल यह है कि आखिर शिक्षा पूर्व-निर्धारित पैकेज में क्यों हो? मैं आखिर इस उम्र में साइंस की पढ़ाई क्यों नहीं कर सकता, यदि 16 वर्ष की उम्र में मैं इससे चूक गया? क्यों अपने कार्यक्षेत्र में दक्ष व्यक्ति यह सोचता है कि ग्राहक उसके पास आएंगे और वह शिक्षा का कारोबार शुरू कर सकता है? यदि सरकार वास्तव में शासन चलाना चाहती है तो वह ऐसा एक नियम प्रस्तावित करके कर सकती है कि किसी को भी पूरे साल फीस चुकाने की जरूरत नहीं होगी और यह मासिक होगी। वह दिन दूर नहीं है जब किसी भी क्षेत्र का कोई व्यक्ति किसी भी कक्षा में आकर अपना पसंदीदा विषय सीख सकता है, लेकिन फीस चुकाकर। और भारत में इस तरह की शिक्षा फिर से जन्म लेगी।

raghu@bhaskarnet.com

RAISONI GROUP a vision beyond
Think Education Think Raisoni
RAISONI GROUP OF INSTITUTIONS
Helpline : 0712 - 6630868 181

**फंडा यह है कि...** हमारी शिक्षा व्यवस्था सबको ज्ञान मुहैया कराने में सफल हो सकती है, बशर्ते यह चायनीज रेस्त्रांओं का कांसेप्ट अपनाए न कि मैक्डोनल्ड्स का।